शुद्ध पानी

गहराया शुद्ध पानी का संकट धरती पर अब देखो फैल रहा है,
ऊर्जा संकट और प्रदूषण पर्यावरण के आंचल में खेल रहा है।
भू-जल का संरक्षण न करने से यह संकट चारों ओर ही व्यापेगा,
व्यर्थ बहाओ अब ना पानी बच्चों का आंगन प्रदूषण झेल रहा है।
गहराता शुद्ध पानी का संकट धरती पर अब देखो फैल रहा है...

एक-एक बूंद बचाओ मिलकर तब सूरज भी मुस्कान बिखेरेगा,
नभ के आंगन तारे भी शरमाएंगे चंदा भी घूंघट सरकाएगा।
ताजे और पुराने पानी का भेद न करके अब संरक्षण करना होगा।
वर्षा जल संचयन तकनीक से हम संभलेंगे वरना धरा पर संकट डोल रहा है।
गहराता शुद्ध पानी का संकट धरती पर अब देखो फैल रहा है...

फूलों की खुशबू बिखरेगी दुल्हन पर श्रृंगार सहज ही आएगा।
बचा लिया शुद्ध पानी हमने तो पर्यावरण दूषित होने से बच जाएगा,
प्रदूषण है जहर हमें अब इस धरती पर घोल न बनने देना।
कल-कारखाने धूल धुएं को रोको इसका आतंक चतुर्दिक फैल रहा है।
गहराता शुद्ध पानी का संकट धरती पर अब देखो फैल रहा है...

प्रकृति का वरदान है पानी इसका अब हमको संचय करना होगा,
जल भंडार दूषित न हो अब हर चेहरे पर मुस्कुराहट लाना होगा।
जल का दुरूपयोग न हो व्यर्थ बहे ना अब इस धरती का पानी,
जल-प्रदूषण को रोका अगर हमने तो समझो प्रकाश चतुर्दिक फैल रहा है।
गहराता शुद्ध पानी का संकट धरती पर अब देखो फैल रहा है..

जल का आंगन

सदा रहे पावन जल फूलों के घर कभी अंधियारा ना छा जाए,
खुशियां महके चहके जीव-जंतु सब जल प्रदूषण ना हो जाए।
वनस्पति जगत भी पनपे वन उपवन में हरियाली रहे सदा,
बंजर भूमि भी सिंचित हो ताल नदी जल से वंचित न हो जाए।
सदा रहे पावन जल फूलों के घर कभी अंधियारा ना छा जाए।

जल से निर्जीव-सजीव होते जल बिन अंबर धरती सूने होते,
पलकों के आंसू नहीं थमते जल अभाव से धरा पर हम नहीं होते।
नदियों का पानी गंदा ना हो कूड़े-करकट का कभी न बसेरा हो,
फूलों की बस्ती में कहीं मरूस्थल का मंजर न चल जाए।
सदा रहे पावन जल फूलों के घर कभी अंधियारा ना छा जाए।

रिमझिम करती बूंदों से मन मयूर झूम-झूम कर गाता रहता,
वसुंधरा के आंचल में नयनों का सौरभ भी बिखरा करता।
कलकल करती आवाजें मन में संगीत सहर्ष उपजा देती है,
जल हो भरपूर हमेशा धरती का हर आंगन प्रमुदित हो जाए।
सदा रहे पावन जल फूलों के घर कभी अंधियारा ना छा जाए।

हर गीत सहज हो जाता है, जब खुशियां छाए हर घर-आंगन,
दुल्हन भी सजकर सुंदर लगती जब चेहरे पर पानी हो पावन।
दस्तक देती खुशियां आएं जब रोका जल तन-मन अर्पण कर,
फूलों संग नाचे भौंरे-तितली, जीव-जंतु सारा जग सुंदर हो जाए।
सदा रहे पावन जल फूलों के घर कभी अंधियारा ना छा जाए।

वसुंधरा का सपना

भूजल का अब स्तर गिरना,
प्रकृति का संतुलन बिगड़ना।
औद्योगिक प्रदूषण का बढ़ता खतरा।
मुश्किल से जीवन यापन करना,
भू जल का अब स्तर गिरना।

तपती वसुंधरा, वनों का कटना,
पानी की कमी से, धूमिल है सपना।
भूकंप, अकाल, भुखमरी, सूखा,
विक्षिप्त पर्यावरण का अब है बढ़ना।
भूजल का अब स्तर गिरना।

खंडित होती ओजोन परत का मिटना,
दूषित गैसों का अब सरगम करना।
पानी की एक बूंद अमृत मानिंद होती है,
पानी रोको है ये वसुंधरा का सपना।
भूजल का अब स्तर गिरना।

पानी रोको अभियान

चिड़िया के बसेरे,
सूने हो गए दरख्तों से।
चमगादड़ लटकता नहीं दिख रहा,
किसी वृक्ष की डाल पर।
जल मुर्गियां जैसे चली गई,
किसी अनजानी मंजिल पर।
मां धरोंदे नहीं बनाने दे रही,
पानी की कमी के कारण।
हाथों में लटकाए बाल्टी,
वृद्ध से लेकर मासूम बच्चा।
लगातार दौड़ रहा है,
एक चुल्लू भर पानी के लिए।
पानी की कीमत का अहसास,
छोटे से बच्चे को भी हो गया है।
वह कहता है मम्मी,
पानी समाप्त हो गया।
तो अब हम क्या करेंगे।
मम्मी कहती है पानी रोको अभियान में,
हम अपना समय दान करेंगे।

संपर्क करें :
कमल सिंह चौहान
'कवि एवं मंच संचालक'
कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास
रेलवे स्टेशन रोड़ बीड़
जिला खंडवा (मध्य प्रदेश) 450 110